साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

समुन्द्र का किनारा

राकेश कुमार वर्मा

मेरे मन के अंदर उठ रहे तूफान से,

वो अनजानी थी,

जो मै लिख नहीं सकता,
वही तो वो कहानी थी.....
अपने आँखों के अश्को को,
हवा की रवानी कहकर,
मैंने खुद को संभाला था,
बहता हुआ पानी कहकर.....
वो आखिरी मुलाकात और,
समुन्द्र का किनारा था,
मै टूट के बैठा था,
और शांत वो नजारा था.....
हलचल थी लहरों में,
समुन्दर वो सोया था,
में भी था स्थिर ही,
बस अश्को ने भिगोया था.....
पैरो की गति मानो,
थम सी गयी थी,
होठो पे आकर आवाज,
जम सी गयी थी....
रह रह के दिल में,
एक ही सवाल आता था,

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

जाने वाले को आज ये दिल,
रोकना क्यू नहीं चाहता था…..
इतने में समुन्द्र में एक,
उफान सा आया,
कही वो डूब न जाये दिल,
मेरा थर्राया…….
ढ़लती हुई शाम का वो,
अंतिम नजारा था,
बहता हुआ साहिल,
कही दूर वो प्यारा था……
दिल की उठा-पटक को,
विराम की तलाश थी,
बहती थी आँखे और,
लालिमा को पानी की प्याश थी……..
समुन्दर के किनारे ने,
ये पाठ था पढाया,
बहता है साहिल मगर,
किनारों ने क्या पाया,
उम्र भर साथी होकर,
जब वो न मिल पाए,
तो बैठा तू किनारे,
क्यू नीर बहाए…….